वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 250
ISBN 978-93-80353-55-5

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित 108 मंत्रों पर आधारित

मनोकामना सिद्धि विधान

–मंत्र रचना –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–विधान रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती वर्ष
सन् 2013-2014 (अमृत महोत्सव) के अन्तर्गत प्रकाशित)

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

छठा संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
2200 प्रतियाँ	मगसिर शु. एकम्, 3 दिसम्बर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (सन् 2004)-2200 प्रतियाँ, द्वितीय संस्करण (सन् 2007)-2200 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण (सन् 2009)-2200 प्रतियाँ, चतुर्थ संस्करण (सन् 2010)-2200 प्रतियाँ
पंचम संस्करण (सन् 2012)-2200 प्रतियाँ

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

आचार्य कहते हैं–

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुगतिं निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

अर्थात् एकमात्र जिनभक्ति में ही इतनी सामर्थ्य है कि उसके द्वारा दुर्गति का निवारण होता है, पुण्य की पूर्णता होती है तथा मुक्तिश्री की प्राप्ति होती है।

पूर्व आचार्यों ने इस प्रकार के छोटे-छोटे श्लोकों के माध्यम से श्रावकों को देव-शास्त्र-गुरू की भक्ति करने के लिए अनेकों प्रेरणाएँ प्रदान की हैं परन्तु आज के युग में सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्यक्ति के पास इतना समय नहीं है कि वह शास्त्रों को पढ़े और इन श्लोकों का अर्थ समझने का प्रयास करे, जनमानस की इस समस्या को सुलझाने के लिए ही समय-समय पर हमें गुरुओं के द्वारा सम्बोधन प्राप्त होते रहते हैं।

इस बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है, उन्होंने ढाई सौ ग्रंथों की लेखन श्रृंखला में भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव में 2600 मंत्रों से समन्वित ''विश्वशांति महावीर विधान'' की रचना की थी, जिसमें से 108 मंत्रों के आधार से उन्हीं की सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने ''मनोकामना सिद्धि विधान'' नामक इस लघु महावीर विधान की रचना करके भगवान महावीर के प्रति अपनी असीम श्रद्धा, भक्ति का परिचय प्रदान किया है।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में रचा गया यह विधान आप सभी के मनोरथों को सिद्ध करने में सहायक हो, यही वीर प्रभू से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

महावीर का छब्बिससौवाँ जन्मजयन्ती उत्सव आया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया-2।।

हो सकता है कि आपको ये पंक्तियाँ पढ़कर ईसवी सन् 2001 के सुनहरे दृश्य याद आ गए हों जब आपने भगवान महावीर स्वामी का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर खूब धूमधाम से मनाया था तथा पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित इस भजन को भी उन्हीं की सुमधुर आवाज में आस्था चैनल, जैन टी.वी., साधना चैनल आदि कई टी.वी. चैनलों पर सुना था। भविष्य में भी जब जहाँ कहीं भी भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव की चर्चा होगी, जहाँ भी उस इतिहास को लिखा जायेगा, तब-तब ये पंक्तियाँ अवश्य याद की जाएंगी तथा भजन की रचयित्री को भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

विशेष बात यह है कि पूज्य आर्यिका श्री ने मात्र भजन, चालीसा आदि की रचना नहीं की है अपितु उन्होंने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित षट्खंडागम ग्रंथ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद करके बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। लगभग सौ से अधिक मौलिक कृतियों की जननी पूज्य श्री चंदनामती माताजी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में इस ''मनोकामना सिद्धि विधान'' की रचना करके भगवान महावीर के प्रति सच्ची भक्ति प्रदर्शित की है।

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष के अंतर्गत पूज्य गणिनी माताजी ने 108 मंत्रों से समन्वित ''मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत'' बनाया था, इस व्रत को हजारों नर-नारियों ने संकल्पपूर्वक ग्रहण किया एवं अपनी-अपनी मनोकामनाएँ सिद्ध की हैं। अधिक दूर जाने की जरूरत नहीं है, जब राजधानी दिल्ली में पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी से यह व्रत ग्रहण किया उसके बाद मात्र नर व्रत करते ही उनकी वर्षों से भाई गई भावना क्षणभर में फलवती हो उठी अर्थात्पूज्य माताजी ने ससंघ भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के लिए मंगल विहार कर दिया। उन्हीं 108 मंत्रों के आधार से पूज्य आर्यिका श्री ने इस ''मनोकामना सिद्धि विधान'' की रचना की है।

इस विधान का विधिपूर्वक अनुष्ठान करके आप सभी अपनी मनोकामनाओं को सिद्ध करें, यही इसकी सार्थकता है तथा मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत करने वाले सभी नर-नारी व्रत के उद्यापन में इस विधान को करके अपने जीवन को समृद्धशाली बनाएं, यही मंगल कामना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि – आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति – अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र –** गोयल, **नाम –** कु. मैना

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत – ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा – चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा – वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व – अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि – सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा – हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा – पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा – 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा – जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत – 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि – तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 150 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि, भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खेराबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनाट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

मनोकामना सिद्धि विधान प्रारंभ

–मंगलाचरण –

शंभु छंद –

प्रभु महावीर इस युग के अंतिम, तीर्थंकर उनको वंदूँ।
है वर्तमान में उनका शासन–काल उन्हें नितप्रति वन्दूँ।।
हैं पाँच नाम से युक्त तथा, वे पंचम बालयती भी हैं।
पंचांग प्रणाम करूँ उनको, पंचमगति प्रभु को प्राप्त हुई।।1।।

छब्बिस सौ वर्षों पूर्व उन्होंने, जन्म लिया कुण्डलपुर में।
इस हेतू प्रभु का छब्बिस सौवां, जन्मकल्याण मना जग में।।
प्रभु महावीर के 2600 वें, जन्मकल्याणक वर्ष में ही।
गणिनी श्री ज्ञानमती माता ने, महाविधान रचा सच ही।।2।।

इसमें छब्बिस सौ मंत्रों के, द्वारा प्रभुवीर की पूजा है।
यह ''विश्वशांति महावीर विधान'' अलौकिक और अनूठा है।।
इनमें से ही इक शतक आठ, मंत्रों के मोती चुन करके।
इक महावीर व्रत बतलाया, माता श्री ज्ञानमती जी ने।।3।।

इस मनोकामनासिद्धी व्रत की, चारों तरफ प्रसिद्धि हुई।
इस व्रत को करने वाले भक्तों की इच्छाएँ पूर्ण हुईं।।
मैंने भी प्रभु महावीर की भक्तीवश इस व्रत को ग्रहण किया।
कुण्डलपुर यात्रा की इच्छा को, चार व्रतों ने सफल किया।।4।।

इस चमत्कार को देख मुझे इन, मंत्रों पर दृढ़ भक्ति हुई।
उनका आश्रय लेकर विधान, रचने की इच्छाशक्ति हुई।।
फिर वीर प्रभू को वन्दन कर, मैंने यह पाठ बनाया है।
जिनवर की भक्ती करने का, शुभ भाव हृदय में आया है।।5।।

इस शुभ विधान के द्वारा भक्तों! कर्म निर्जरा करना है।
लौकिक वैभव के साथ-साथ, आध्यात्मिक लक्ष्मी वरना है।।
महावीर प्रभू के चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
रत्नत्रय की दृढ़ता होवे, जब तक नहिं पाऊँ सिद्धगती।।6।।

अथ जिनयज्ञ पूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री महावीर जिनेन्द्र पूजा

–स्थापना –

तर्ज –आने से जिसके आए बहार.....

दर्शन से जिनके कटते हैं पाप, पूजन से मिटते हैं सब संताप,
मूरत सुहानी है–तेरी महावीरा, छवि जगन्यारी है–प्रभु महावीरा।।टेक.।।
भक्ति करके तेरी, मैं संताप मन का मिटाऊँ।
अपने मन में तेरी, प्रतिमा नाथ कैसे बिठाऊँ।।
तुम भगवन्, अतिपावन,
महिमा निराली है–तेरी महावीरा, छवि जग न्यारी है–तेरी महावीरा।।1।।

आज इस मण्डल पर, स्थापित करूँ नाथ! तुमको।
अपने मन मंदिर में, स्थापित करूँ नाथ! तुमको।।
तुम भगवन्, अतिपावन,
महिमा निराली है–तेरी महावीरा, छवि जग न्यारी है–प्रभु महावीरा।।2।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –

क्षीरसिन्धु नीर को मैं भरूँ भृंग में।
तीन धारा करूँ वीर पद पद्म में।।

वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।1।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर की सुगन्धियुक्त केशर लिया।
घिस के नाथ चरण में उसे चर्चिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।2।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के धुले तंदुलों को लिया।
श्रीजिनेन्द्र के निकट पुंज को चढ़ा दिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।3।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति भाँति के गुलाब पुष्प मैंने चुन लिया।
पुष्पमाल को बनाय प्रभु के पद चढ़ा दिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।4।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य को बनाय थाल भर लिया।
स्वस्थता की प्राप्ति हेतु प्रभु समीप धर लिया।।

वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।5।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल में जले रत्नदीप जगमगे।
आरती उतारते ही मोह का तिमिर भगे।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।6।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कर्पूर मिश्रित जला अग्नि में।
नाथ चाहूँ जलाना आज कर्म मैं।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।7।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर अमरूद भर थाल में।
पादपद्म में चढ़ाय नाऊं निज भाल मैं।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।8।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादिक अष्टद्रव्य को सजाय के।
"चन्दनामती" अनर्घ्यपद मिले चढ़ाय के।।

वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।9।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ नाथ के पाद में।
शांति हो विश्व में यही मेरी आश है।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।

शांतये शांतिधारा।

कल्पवृक्ष के सुमन हैं नहीं पास में।
ये ही कोमल कुसुम मैं लिया हाथ में।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
पूर्ण करती सभी की मनोकामना।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

महावीर भगवान की, महिमा अपरम्पार।
उनकी पूजन से मिले, मनवाञ्छित फल सार।।1।।

अथ प्रथमवलये षोडशकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

तीर्थंकर पद की प्राप्ति हेतु, सोलहकारणभावना कहीं।
उनमें पहली दर्शनविशुद्धि, सम्यक्त्वशुद्धि में हेतु कही।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनशुद्धिप्राप्तकारकाय दर्शनविशुद्धिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन व ज्ञान चारित्र और, उपचार विनय ये चार कहीं।
इनसे संयुक्त प्राणियों में, भावना विनयसम्पन्न हुई।।

प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयगुणप्रापणसमर्थाय विनयसंपन्नताभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है तृतिय भावना शील व्रतों में, अनतिचार बुद्धी रखना।
निर्दोष व्रतों का पालन कर, आध्यात्मिक सुख वृद्धी करना।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।3।।

ॐ ह्रीं निरतिचारव्रतशीलादिपालनबुद्धिप्रदायकाय शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, भावना ज्ञान को शुद्ध करे।
जो सतत ज्ञान अभ्यास करें, वे निजआतम अवबुद्ध करें।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।4।।

ॐ ह्रीं सततज्ञानाभ्यासकरणसमर्थाय अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार, शरीर व भोगों से, वैराग्य भाव जब होता है।
पंचम संवेग भावना से, संयुत मानव तब होता है।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।5।।

ॐ ह्रीं संसारशरीरभोगवैराग्यकरणबुद्धिप्रदायकाय संवेगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयधारण की बुद्धी, आत्मा को धनी बनाती है।
तब निज शक्ती अनुसार त्याग में, स्वयं रुची बढ़ जाती है।।

प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।6।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारणबुद्धिकरणसमर्थाय शक्तितस्त्यागभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध तपश्चरण करने की, शक्ति पुण्य से मिलती है।
निज शक्ती सम तप करो सदा, तो आत्मशक्ति खुद बढ़ती है।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।7।।

ॐ ह्रीं नानाविधतपश्चरणकरणशक्तिप्रदायकाय शक्तितस्तपो-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनिवर क्रमशः धर्म ध्यान से, शुक्लध्यान को प्राप्त करें।
वे साधु समाधि भावना के, द्वारा अज्ञान समाप्त करें।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।8।।

ॐ ह्रीं साधुगणधर्म्यशुक्लध्यानलीनभक्तिशक्तिप्रापकाय साधुसमाधि-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काय से गुरुओं की, वैयावृत्ती जो करें सदा।
वे नवम भावना को भाकर, निजकायिक शक्ती लहें मुदा।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।9।।

ॐ ह्रीं गुरुसेवाकरणशक्तिप्रदायकाय वैयावृत्यकरणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवाञ्छित फल देने वाली, अरिहंत भक्ति है इस जग में।
सब विघ्न विलय करने वाली, यह दशम भावना है सच में।।

प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।10।।

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलदानसमर्थाय अर्हद्भक्तिभावनाबलेन तीर्थंकर-पदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संघ चतुर्विध के नायक, आचार्य पूज्य परमेष्ठी हैं।
उन भक्ती से सम्यक्चारित, धारण की शक्ती मिलती है।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।11।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रधारणशक्तिदानसमर्थाय आचार्यभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग श्रुत सिन्धू में, अवगाहन सदा किया करते।
वे बहुश्रुतभक्ति भावना से, श्रुतज्ञान दिवाकर को वरते।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।12।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानपूर्णकरणसमर्थाय बहुश्रुतभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकर-पदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रवचन भक्ति भावना से, वृद्धिंगत आतमशक्ति करें।
मन वचन काय के द्वारा नित, वे संघचतुर्विध भक्ति करें।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघभक्तिभावनावर्द्धकाय प्रवचनभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता स्तव वंदन आदिक षट्-क्रिया सदा जो मुनि करते।
अपने आवश्यक नहिं तजकर, वे परमावश्यक पद वरते।।

प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।14।।

ॐ ह्रीं षडावश्यकक्रियाकरणशक्तिप्रदाय आवश्यकापरिहाणि-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म प्रभावना करने से, निज की प्रभावना होती है।
फिर मोक्षमार्ग में लगने से, त्रय रत्न साधना होती है।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।15।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावनाकरणबुद्धिवृद्धिंकराय मार्गप्रभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधर्मी जन के साथ सदा, वात्सल्यभाव जो रखता है।
वह ही समझो प्रवचन वत्सलता, गुण का पालन करता है।।
प्रभु महावीर ने भी इसके, बल पर तीर्थंकर पद पाया।
मनवाञ्छित फल पाने हेतू, मैं भी चाहूँ प्रभु पद छाया।।16।।

ॐ ह्रीं साधर्मिवात्सल्यबुद्धिकरणसमर्थाय प्रवचनवत्सलत्वभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

तर्ज –चाँद मेरे आ जा रे.....

भावना सोलह कारण की–2,
तीर्थंकरों के, सानिध्य में जो, भाते प्रभू वे बनते।।भावना.....।।

महावीर ने पहले भव में, जिनवर के समवसरण में।
दर्शनविशुद्धि आदिक सब, भावना भाई थीं मन में।।
भावना सोलहकारण की....।।1।।

पूर्णार्घ्य चढ़ाकर प्रभु पद, निज को मैं शुद्ध बनाऊँ।
सोलहकारण व्रत को कर, इक दिन उन सम बन जाऊँ।।
भावना सोलहकारण की.....।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिप्रवचनवत्सलत्वपर्यन्तषोडशकारणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ द्वितीयवलये षोडशकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शेर छंद–

कुण्डलपुरी में राजा सिद्धार्थ की रानी।
सोलह सुपन देखें वहाँ त्रिशला महारानी।।
पहला स्वपन ऐरावत हाथी का देखके।
त्रैलोक्य पूज्य पुत्र पाया, पूजूँ उन्हें मैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्योत्तमपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुरैरावत-हस्तिशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गर्भ में तीर्थंकर सुत के प्रभाव से।
माता ने महावृषभ को देखा था स्वप्न में।।
उस फल में ही त्रैलोक्य ज्येष्ठ पुत्र हुआ था।
उन वीर की पूजा करें हम आज भी यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं समस्तलोकज्येष्ठपदधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्महावृषभ-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब सिंह को देखा सुपन में त्रिशला मात ने।
पाया अनन्तबल से युक्त पुत्र आपने।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलशालिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की युगल माला देखी थी स्वप्न में।
सद्धर्म तीर्थ को चलाने वाला सुत मिले।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मतीर्थप्रवर्तनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्रग्युग्म-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेकयुत लक्ष्मी दिखीं त्रिशला को स्वप्न में।
किया पुत्र का अभिषेक, मेरु गिरि पे इन्द्र ने।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रकृतसुमेरुशिखराभिषेकप्राप्तपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्लक्ष्मीशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठे स्वपन में चन्द्रमा देखा था मात ने।
सब जन को सुखप्रदायि पुत्र दिया मात ने।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाल्हादनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुश्चन्द्रशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश का सूरज दिखा त्रिशला को स्वप्न में।
उस फल में सूर्य कान्तिमान पुत्र थे जन्में।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं भास्करद्युतिधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसूर्यशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से भरे कलशयुगल जब स्वप्न में दिखे।
निधियों के स्वामी पुत्र को पाकर सभी हरषे।।

उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं निधिस्वामिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःकुंभयुगलशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक मत्स्ययुगल स्वप्न में देखा था मात ने।
अतिशय सुखों का धारी पुत्र दिया मात ने।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अतिशयसौख्यधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्मत्स्ययुग्म-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देखा कमल से युक्त सरोवर जो सुपन में।
इक सहस्र आठ लक्षणों युत पुत्र था फल में।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।10।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षणोद्भासिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसरोवरशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लहरों से युक्त सागर जब स्वप्न में दिखा।
उस फल में त्रिशलापुत्र को कैवल्य पद मिला।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपलब्धिकृतपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसमुद्रशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने का सिंहासन दिखा माता को स्वप्न में।
त्रैलोक्यगुरु साम्राज्यधारि पुत्र को जन्में।।

उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।12।।

ॐ ह्रीं जगद्गुरुसाम्राज्यधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहासन-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देखा विमान स्वर्ग से आता है स्वप्न में।
स्वर्गावतारि पुत्र आया उनके गर्भ में।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं स्वर्गावतारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्वर्विमानशुभस्वप्न प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदहवें स्वप्न में दिखा नागेन्द्र भवन है।
वह पुत्र मिला जिसके अवधिज्ञान नयन हैं।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानलोचनधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्धरणेन्द्रभवन-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों की राशि स्वप्न में त्रिशला के आ गई।
उस फल में गुणाकरस्वरूप पुत्र पा गईं।।
उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।15।।

ॐ ह्रीं गुणाकरस्वरूपपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःप्रोद्यद्रत्ननरा-शीक्षणशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्धूम अग्नि देखी सोलहवें स्वप्न में।
तब कर्मनष्टकारि पुत्र पाया उन्होंने।।

उन स्वप्नप्रदर्शक प्रभू की अर्चना करूँ।
महावीर वीर सन्मती की वन्दना करूँ।।16।।

ॐ ह्रीं कर्मेन्धनदहनकारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्निर्धूमज्वलनेक्षण-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)–

सोलह स्वप्नों के बाद दिखा, त्रिशला रानी को इक सपना।
स्वर्णिम कांती युत एक वृषभ, मेरे मुख कमल प्रविष्ट हुआ।।
उस फल में ज्ञात हुआ उनको, तीर्थंकर सुत उदरस्थ हुए।
उन स्वप्न दिखाने वाले प्रभु को, पूजें हम पूर्णार्घ्य लिए।।1।।

ॐ ह्रीं मातुः ऐरावतहस्तिप्रभृतिनिर्धूमअग्निपर्यन्तअतिशयकारिषोडश-स्वप्नप्रदर्शकाय मनोवाञ्छित फलप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ तृतीय वलये चतुस्त्रिंशत्कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

जिनके परमौदारिक शरीर में, कभी पसीना नहिं आता।
शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करे, भक्तों को उनकी गुण गाथा।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।1।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वास्थ्यप्रदायकाय निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके परमौदारिक शरीर में, मल का सदा अभाव रहा।
वे स्वात्मविशुद्धि प्रदान करें, भक्तों को निर्मल भाव सदा।।

तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुण मण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।2।।

ॐ ह्रीं स्वात्मविशुद्धिप्रदायकाय मलविरहितसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके परमौदारिक शरीर में, क्षीर समान रुधिर रहता।
समरसी भाव दायक वे प्रभु, भक्तों में समरस भरें सदा।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।3।।

ॐ ह्रीं समरसीभावप्रदायकाय क्षीरसमरुधिरत्वसहजातिशयगुण-मंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके शरीर का वज्रवृषभ, नाराच संहनन माना है।
तन-मन शक्ती वर्धन हेतू, हमने प्रभु को पहचाना है।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।4।।

ॐ ह्रीं निजात्मशक्तिवर्धकाय वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुरस्र संस्थान सदा, जिनके शरीर का रहता है।
उन स्वात्मसौख्यदायक प्रभुवर का, रूप मनोहर लगता है।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।5।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसौख्यप्रदायकाय समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशयगुण-मंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी के सब उत्तम परमाणू, जिनका रूप बनाते हैं।
सौंदर्यखान उन प्रभु का रूप, निरखने इन्द्र भी आते हैं।।

तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।6।।

ॐ ह्रीं इन्द्रनरेन्द्र-धरणेन्द्रखगेन्द्रनेत्रमनोहारिसौंदर्यसमन्विताय अनुपम-सहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके शरीर की शुभ सुगंधि, सबके मन को सुरभित करती।
जिनगुणयश सुरभी लेने को, त्रिभुवन जनता इच्छुक रहती।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।7।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुयशोविस्तारकाय सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवत्स आदि इक सहस आठ, लक्षण जिनमें प्रगटित होते।
शुभ कर्मों के कारण उनके, पद में देवादि विनत होते।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।8।।

ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिवारकाय अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजाति-शयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम बल को वृद्धिंगत करने, वाला बल जिनके तन में।
उनके अनंतबलवीर्य नाम का, अतिशय प्रगट हुआ सच में।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।9।।

ॐ ह्रीं आत्मबलवर्धकाय अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितमितप्रिय मधुर वचन जिनके, अतिशयस्वरूप पाया जाता।
सबका करते कल्याण तथा, निज का कल्याण भी हो जाता।।

तीर्थंकर प्रभु महावीर के तन में, जन्म से ही यह अतिशय था।
इस अतिशय गुणमण्डित जिनवर को, नमूँ अतः मैं अर्घ्य चढ़ा।।10।।

ॐ ह्रीं कण्ठाकुंठितफलप्रदाय प्रियहितमधुरवचनसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, क्षेम व सुख की वृद्धि हुई।
चउ शतक कोस तक हो सुभिक्षता, ईति भीतियाँ नष्ट हुईं।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमकराय गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञाना-तिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, गगनगमन करने लगते।
धरती से बीस हजार हाथ, ऊपर ही समवसरण बनते।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।12।।

ॐ ह्रीं उत्तमगतिप्रदायकाय गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, पूर्ण अहिंसक बन जाते।
अनुकम्पा गुण के कारण ही, सब प्राणी उनसे सुख पाते।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।13।।

ॐ ह्रीं अनुकंपागुणविकसिताय प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, कवलाहार अभाव हुआ।
आहारशुद्धि के फल स्वरूप, उनको यह अतिशय प्राप्त हुआ।।

यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।14।।

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिफलप्रदायकाय कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, उपसर्गों का अभाव हुआ।
सम्पूर्ण उपद्रव नष्ट हुए, समता का पूर्ण विकास हुआ।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारणसमर्थाय उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, चतुर्मुखी बनकर प्रगटे।
इक मुख होकर भी सब जन को, अपने-अपने सम्मुख दिखते।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनोहराय चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, छाया रहित शरीर हुआ।
उनकी छत्रच्छाया पाने को, मानस मेरा अधीर हुआ।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।17।।

ॐ ह्रीं भगवच्छत्रछायाप्रापकाय छायारहितकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, पलक झपकना बन्द हुआ।
नासाग्र दृष्टि हो गई स्वयं, अब ज्ाननेत्र अवलंब लिया।।

यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।18।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रप्रदायकाय पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, विद्या ईश्वरता पाई।
निज आत्मतत्त्व का ज्ञान हुआ, लौकिक ईश्वरता ठुकराई।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।19।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञानप्रापकाय सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, केश व नख नहिं बढ़ते हैं।
सब जन को अभयदान देते, हर मन को पावन करते हैं।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वजनताभयदानदायकाय नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को कैवल्य प्रगट होते ही, दिव्यध्वनि प्रारंभ हुई।
वह द्वादशांग श्रुतज्ञानरूप, गणधर के द्वारा ग्रथित हुई।।
यह केवलज्ञानी का अतिशय, महावीर प्रभू में प्रगट हुआ।
उनके चरणों की पूजन से, मेरे मन में सुख प्रगट हुआ।।21।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्राप्तिकराय अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनि-केवलज्ञानातिशयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के तप बल से सब, ऋतु के फल-फूल साथ फलते।
सूखे तरु भी फलवान बने, जिनको लख हृदय कमल खिलते।।

देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःकमलविकासकाय सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणाम-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ के धूली कण्टक आदिक, सब वायुकुमार दूर करते।
उन प्रभु के सम्मुख उष्ण पित्त, आदिक सब रोग स्वयं टलते।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।23।।

ॐ ह्रीं उष्णपित्तादिरोगनिवारकाय वायुकुमारोपशमितधूलिकण्टकादि-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के विहार से सभी जगह, आपस में मैत्री हो जाती।
हो जन्मजात शत्रुता किसी की, तो जिनसम्मुख नश जाती।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वजनविरोधनिवारकाय सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के विहार में इक योजन तक, पृथ्वी रत्नमयी बनती।
सब जन को सुख देने वाली, दर्पण तल सम निर्मल दिखती।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वकष्टनिवारणकराय आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवो-पनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु श्रीविहार के पूर्व मेघ, गन्धोदक वृष्टी करते हैं।
वह बूंद भी जिस पर पड़ जाती, उसके सब रोग विनशते हैं।।

देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।26।।

ॐ ह्रीं रक्तपित्तविस्फोटकादिनानाव्याधिनिवारकाय मेघकुमारकृत-गंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के सन्निध से वृक्ष सभी, फलभार सहित हो झुक जाते।
सर्वोत्तम फल दायक प्रभु को, नम कर मानो वे फल जाते।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।27।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तमफलप्रदानसमर्थाय फलभारनम्रशालिदेवोपनीता-तिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन को परमानंद प्राप्त, हो जाता प्रभु दर्शन करके।
वह चुम्बकीय व्यक्तित्व भला, किसको सुख नहिं देता जग में।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।28।।

ॐ ह्रीं परमसौख्यप्रदायकाय सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीताति-शयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकूल वायु चलती सदैव ही, मन्द-मन्द प्रभु विहरण में।
प्रतिकूल नहीं कोई रहता, उनके सम्मुख अवनीतल पे।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।29।।

ॐ ह्रीं प्रतिकूलजनापसारकाय अनुकूलविहरणवायुत्वदेवोपनीताति-शयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल से परिपूर्ण कूप, सरवर आदिक हो जाते हैं।
जिनवर से स्वात्मसुधारस पा, मुनिगण निज में खो जाते हैं।।

देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।30।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुधारसप्रदायकाय निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादिदेवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शरदकालवत् गगन स्वच्छ, मानो प्रभु का गुणगान करे।
चउ दिश में यश फैले उनका, जो जिनवर चरण प्रणाम करें।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।31।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिग्यशोविस्तारकाय शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन की रोग शोक बाधा, प्रभु समवसरण में टल जाती।
इसलिए स्वस्थता प्राप्ति हेतु, जनता प्रभु के सम्मुख आती।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।32।।

ॐ ह्रीं परमस्वास्थ्यविधायकाय सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्वदेवोपनीतातिशयगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष निज मस्तक पर, ले धर्मचक्र आगे चलता।
जिनवर विहार के समय धरा पर, धर्मतीर्थ वर्तन करता।।
देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।33।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मबुद्धिविवर्धकाय यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरण कमल तल स्वर्ण-कमल की, रचना इन्द्र स्वयं करते।
चतुरंगुल अधर रहें जिनवर, फिर भी वे कमल पूज्य बनते।।

देवोपुनीत यह अतिशय भी, महावीर प्रभू ने प्राप्त किया।
मैं भी यह अतिशय प्राप्त करूँ, अतएव अर्घ्य का थाल लिया।।34।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमणनिवारणसमर्थाय तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य–

दश अतिशय जन्म समय से ही, महावीर प्रभू में प्रगट हुए।
केवलज्ञानी बनते ही ग्यारह, अतिशय उनमें उदित हुए।।
तेरह देवोपुनीत अतिशय हैं, कहे तिलोयपण्णत्ती में।
इन चौंतिस अतिशय युक्त वीर, प्रभु को पूजूँ पूर्णार्घ्य लिये।।1।।

ॐ ह्रीं चतुस्त्रिंशत्अतिशयसमन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चतुर्थवलये अष्टकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा– **वृक्ष अशोक हरे सदा, सबका शोक अरिष्ट।**
प्रातिहार्य पहला कहा, महावीर का इष्ट।।1।।

ॐ ह्रीं संपूर्णशोकनिवारणसमर्थाय अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्रत्रय प्रभु पर ढुरें, त्रिभुवन सौख्य करंत।
प्रातिहार्य दूजे सहित, पूजूँ सन्मति कंज।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनसौख्यसाधनकराय छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन पर राजते, अधर वीर भगवान।
प्रातिहार्य यह है तृतिय, पूजूँ सौख्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपूज्यपददायकाय सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण बारह सभा, से वेष्टित भगवान।
प्रातिहार्य चौथा कहा, जजूँ वीर धर ध्यान।।4।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्राणिगणानुग्रहकारकाय द्वादशगणवेष्टितमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुंदुभि वाद्य बजाय के, देव करें उद्घोष।
प्रातिहार्य है पाँचवां, पूजूँ मन संतोष।।5।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावकाय देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के पुष्प ले, वृष्टि करें सुरराज।
गुणपुष्पों की प्राप्ति हित, पूजूँ त्रिभुवननाथ।।6।।

ॐ ह्रीं गुणसुरभिप्रसारकाय सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल युत वीर प्रभु, स्वात्मप्रभा में मग्न।
प्रातिहार्य के प्रति मेरा, आज समर्पित अर्घ्य।।7।।

ॐ ह्रीं स्वात्मप्रभाविस्तारकाय भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुरें सदा, महावीर के पास।
प्रातिहार्य अष्टम कहा, जजूँ नमाकर माथ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःप्रियकराय चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)–

अरिहंत अवस्था में प्रभु के, ये आठों प्रातिहार्य प्रगटें।
महावीर प्रभू इन को पाकर भी, सदा विरागी ही रहते।।
हर मन आनन्दित होता है, तीर्थंकर वैभव को लखके।
हम भी पूर्णार्घ्य चढ़ाने को, लाये हैं थाल सजा करके।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रभृतिचतुःषष्ठिचामरपर्यन्तअष्टमहाप्रातिहार्यसमन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचमवलये चतुःकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शेर छंद –

प्रभु वीर ने जब ज्ञानावरण कर्म क्षय किया।
उनमें अनन्तज्ञान गुण तब ही प्रगट भया।।
मैं भी करूँ अज्ञान का विनाश भक्ति से।
ले अर्घ्य थाल अर्पूं जिनपद में भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तज्ञानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर दर्शनावरण करम विनाश नाथ ने।
प्रगटा अनंतदर्शन गुण वीर! आप में।।
मैं भी करूँ इस कर्म का विनाश भक्ति से।
ले अर्घ्य थाल अर्पूं जिनपद में भक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तदर्शनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मोहनीय कर्म नाश सौख्य पा लिया।
जो सुख कभी न नष्ट हो उसको दिखा दिया।।
मैं भी करूँ इस कर्म का विनाश भक्ति से।
ले अर्घ्य थाल अर्पूं जिनपद में भक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतसौख्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में छिपे अनंतवीर्य गुण को पा लिया।
जब अन्तराय कर्म को तप से नशा दिया।।
मैं भी करूँ इस कर्म का विनाश भक्ति से।
ले अर्घ्य थाल अर्पूं जिनपद में भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतवीर्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य–

तर्ज –आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.....

चार घातिया कर्म नाश कर, तीर्थंकर अरिहंत बने।
निज आतम के गुण विकास कर, क्षेमंकर भगवंत बने।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो।।टेक.।।

केवलज्ञानी वर्धमान आकाश में अधर विराज रहे।
समवसरण के मध्य अनंत चतुष्टय संयुत राज रहे।।
अक्षय सुख के सागर जिनवर, सिद्धिप्रिया के कंत बने।
निज आतम के गुण विकास कर, क्षेमंकर भगवंत बने।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो।।1।।

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टयगुणसमन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ षष्ठमदले अष्टादशकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज –जहाँ डाल-डाल पर.....

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम पूजन करने आए।।टेक.।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर को, नहिं भूख कभी लगती है।
ज्ञानामृत भोजन से आत्मा में, तृप्ति बनी रहती है।।
तृप्ति बनी रहती है.....
आतम सन्तुष्टि मिले हमको भी, रोग क्षुधा नश जाए,
हम पूजन करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसंतुष्टिकारकाय क्षुधामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम पूजन करने आए।।
है दोष तृषा जिससे प्राणी, संतप्त सदा रहते हैं।
जिनवर यह दोष नष्ट करके, संतृप्त सदा रहते हैं।।
संतृप्त सदा.....
संताप जगत का दूर करो, इस भाव से अर्घ्य चढ़ाएं,
हम पूजन करने आए।।2।।

ॐ ह्रीं संसारसंतापनिवारकाय तृषामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
भयदोष नाश के कारण भय भी, प्रभु से भय खाता है।
इनकी भक्ती से हर प्राणी, भयविरहित हो जाता है।।
भयविरहित.....
सम्यक्त्व बने निर्दोष हमारा, यही भावना भाएँ,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तभयविरहितनिर्दोषसम्यक्त्वप्रदाय भयमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
जिनवर ने क्षमाभाव द्वारा ही, क्रोध शत्रु को जीता।
उनके नेत्रों में इसीलिए, दिखती न लालिमा रेखा।।
दिखती.....
हो क्रोध नष्ट हम सबका भी, बस यही भावना भाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।4।।

ॐ ह्रीं क्षमाभावप्रदायकाय क्रोधमहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
चिन्ता है चिता समान कही, प्रभु में न कभी वह रहती।
स्वात्मा के चिन्तन में उनकी, बस दृष्टि सदा ही रहती।।
बस दृष्टि सदा ही.....
चिन्ता को तजकर निज चिन्तन का, भाव हृदय में लाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।5।।

ॐ ह्रीं स्वात्मचिंतनबुद्धिप्रदाय चिन्तामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
तीर्थंकर प्रभु के तन में कभी, बुढ़ापा नहिं आता है।
इसलिए जरा यह दोष प्रभू में, पाया नहिं जाता है।।
पाया.....
उनकी पूजन से इक दिन परमौदारिक तन मिल जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।6।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकदिव्यदेहप्रदाय जरामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
संसार में राग के कारण ही, कर्मों का बंधन होता।
वैराग्य के बल पर जिनवर ने, उस राग दोष को जीता।।
उस राग.....
हम भी सराग सम्यक्त्व से उसको, क्रमशः शीघ्र नशाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।7।।

ॐ ह्रीं सरागवीतरागसम्यक्त्वप्रदाय रागमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
आठों कर्मों में सबसे प्रबल है, मोह कर्म का नाता।
इस महादोष को जिनवर ने, निज ध्यान के बल से घाता।।
निज ध्यान.....
बहिरात्म बुद्धि का हो विनाश, तो मोह स्वयं नश जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।8।।

ॐ ह्रीं बहिरात्मबुद्धिनिवारकाय मोहमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
यूँ तो हर प्राणी का शरीर, रोगों का घर कहलाता।
लेकिन प्रभु वीर ने रोग नाम के, महादोष को नाशा।।
महादोष को.....
इसलिए प्रभू की पूजन से, तन रोग शीघ्र नश जाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।9।।

ॐ ह्रीं नानाव्याधिनिवारणसमर्थाय रोगमहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
इस जग में जन्म के साथ मरण, हर प्राणी का होता है।
पर मृत्यु दोष से रहित प्रभू का, मोक्षगमन होता है।।
मोक्षगमन.....
बस इसीलिए प्रभु पूजन से, यमराज दूर भग जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।10।।

ॐ ह्रीं यमराजजयबुद्धिप्रदाय मृत्युमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
शारीरिक श्रम के कारण तन में, पसीना आ जाता है।
पर स्वेददोषविरहित प्रभु तन में, नहिं पसेव आता है।।
नहिं पसेव.....
प्रभु पूजन से शारीरिक श्रम में भी नहिं तन मुरझाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।11।।

ॐ ह्रीं शरीरश्रमापनुदनयुक्तिप्रदाय स्वेदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
संसारी प्राणी विषम परिस्थिति, में विषाद करते हैं।
इस महादोष विरहित प्रभुवर, न विषाद कभी करते हैं।।
न विषाद कभी.....
बस इसीलिए अर्चना प्रभू की परमाल्हाद दिलाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।12।।

ॐ ह्रीं परमाल्हादसौख्यप्रदायकाय विषादमहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
अज्ञानी जन निज तुच्छ ज्ञान, आदिक का मद करते हैं।
लेकिन मददोष रहित जिनवर में, कोई न मद रहते हैं।।
कोई न.....
उनकी पूजन से अष्टभेदयुत अहंकार नश जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।13।।

ॐ ह्रीं अष्टविधमदनिवारणबुद्धिप्रदायकाय मदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
रतिदोष सहित मानव इन्द्रिय, विषयों में रत रहते हैं।
पर स्वात्मरमण में रत जिनवर, रति महादोष तजते हैं।।
रति महा.....
उन पूजन से निज में रत रहने की बुद्धी आ जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।14।।

ॐ ह्रीं स्वात्मरमणबुद्धिप्रदायकाय रतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
अपना अपूर्व वैभव लखकर भी, प्रभु विस्मित नहिं होते।
तीर्थंकर जैसी पुण्य प्रकृति से, दिव्य विभवमय होते।।
दिव्य विभवमय.....
उनका अर्चन परमाश्चर्य सिद्धीपद प्राप्त कराए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।15।।

ॐ ह्रीं परमाश्चर्यस्वरूपसिद्धिपदसाधनकराय विस्मयमहादोष-विवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
निज शुक्लध्यान में स्थित प्रभु को, नींद कभी नहिं आती।
उस निद्रा महादोष को आखिर, निद्रा खुद आ जाती।।
निद्रा खुद.....
मुक्तीपद के साधक में आलसभाव स्वयं नश जाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।16।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपदसाधनालस्यनिवारकाय निद्रामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
जिनवर ने पुनः पुनर्भव नाशा, सार्थक जन्म कराया।
इसलिए जन्म महादोष रहित, उनका यश जग में छाया।।
उनका यश.....
जब तक नहिं जन्म का दोष नशे हम सार्थक जन्म कराएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।17।।

ॐ ह्रीं पुनः पुनर्भवनिवारकाय जन्ममहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभू ने सारे दोष नशाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।
संसार में अरति महादोष से, द्वेषबुद्धि बढ़ती है।
सन्मति प्रभु की यह दोष रहितता, सबका मन हरती है।।
सबका मन.....
प्रभु भक्ति करें तो द्वेष बुद्धि नाशन की युक्ती पाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।18।।

ॐ ह्रीं द्वेषबुद्धिनाशनयुक्तिप्रदाय अरतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (स्रग्विणी छंद)–

अठारह महादोष विरहित प्रभू हैं।
क्षुधा से अरति तक न उनमें कोई हैं।।
जलादि का पूर्णार्घ्य लेकर जजूँ मैं।
तभी पूर्ण निर्दोष पद को लहूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषविरहिताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ सप्तमदले द्वादशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– शंभु छंद–

महावीर प्रभू जी चैत्र शुक्ल, तेरस की रात्री में जन्मे।
तब उनका जन्मोत्सव करके , सौधर्म इन्द्र भी धन्य बने।।
जन्माभिषेक हो गया मेरु पर, पुनः इन्द्र ने नाम रखा।
तुम वीर और प्रभु वर्धमान हो, मैं भी पूजूँ तुम्हें सदा।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपर्वतोपरिजन्माभिषेकानन्तर इंद्रकृतवीरवर्धमानद्वय-नामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर नंद्यावर्त महल में, वर्धमान पलना झूलें।
तब संजय विजय मुनी चारण–ऋद्धीधारी नभ से उतरे।।
पलना की त्रय प्रदक्षिणा दे, मन की शंका निर्मूल हुई।
तब वर्धमान को ''सन्मति'' कह, मुनिद्वय की इच्छा पूर्ण हुई।।2।।

ॐ ह्रीं बाल्यकालेसंजयविजयमुनिद्वयशंकासमाधानप्राप्तसमय-महामुनिकृतसन्मतिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक दिन कुण्डलपुर उपवन में, सन्मति देवों संग खेल रहे।
तब संगमदेव परीक्षा करने, आया सर्प रूप धरके।।
सब बालक डरकर भगे किन्तु, ये चढ़े सर्प फण के ऊपर।
तब देव ने महावीर कह कर, पूजा मैं भी पूजूँ रुचिधर।।3।।

ॐ ह्रीं देवबालकसार्धक्रीडासमयसंगमदेवकृतमहाफणधरोपसर्ग-विजयितद्-देवकृतमहावीरनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिमुक्तक वन प्रभु महावीर के, ध्यान से इक दिन पावन था।
तब रुद्र ने आ उपसर्ग किया, पर प्रभु मन ध्यान का सावन था।।
उनको अविचल लख रुद्र ने भी, महति महावीर नाम रक्खा।
वह महादेव तव चरण झुका, मैंने भी अर्घ्य सजा रक्खा।।4।।

ॐ ह्रीं अतिमुक्तकवनमध्यध्यानस्थकालरुद्रकृतमहोपसर्गविजय-समयतन्महादेवकृतमहतिमहावीरनाममण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री इन्द्रभूति गौतम आदिक, ग्यारह गणधर के स्वामी थे।
प्रभु महावीर द्वादश गण के, अधिपति त्रिभुवन में नामी थे।।
उन महायोगि के चरणों में, मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ।
मैं भी योगी बन सकूँ इसी, अभिलाषा से संस्तवन करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं गणधरदेवादिस्वामिने महायोगीश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्यकर्म को नाश वीर ने, सिद्ध अवस्था प्राप्त किया।
इसलिए कहाए द्रव्यसिद्ध, सारे गुण तुमने प्राप्त किया।।
आत्मा की सिद्ध अवस्था तो, प्राकृतिक अमूर्तिक रहती है।
उस पद की प्राप्ती हेतु सभी को, दीक्षा लेनी पड़ती है।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मुक्तसाक्षात्सिद्धपदप्राप्ताय द्रव्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण प्राप्ति के बाद देह-विरहित अदेहगुण को वंदन।
पावापुरि के जलमंदिर से, शिवनारि वरी जगदानंदन।।
परमौदारिक तैजस कार्मण, तीनों शरीर का हुआ दहन।
उन देहरहित जिनवर पद में, मेरा है कोटि नमन अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकतैजसकार्मणत्रयदेहविरहिताय अदेहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का ऐसा जनम हुआ, जिससे वे बने अजन्मा थे।
तब अपुनर्भव गुण से विशिष्ट, होकर संसार के ब्रह्मा थे।।
संसार में होने वाले पुनरागमन चक्र से छूट गये।
उनकी पूजन से मेरे भी, दुर्गति के बंधन टूट गये।।8।।

ॐ ह्रीं संसारमध्यपुनरागमनविरहिताय अपुनर्भवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा के क्षायिकज्ञान का जिनको, आस्वादन है प्राप्त सदा।
चैतन्य गुणों के साथ ज्ञान का, चूँकि रहा संबंध सदा।।
बस उसी ज्ञान की प्राप्ति हेतु, रत्नत्रय धारण करना है।
नहिं जब तक उपलब्धी होती, जिनवर का अर्चन करना है।।9।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयीचेतनागुणविशिष्टाय ज्ञानैकचिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा निश्चय नय से संश्लेष, रहित स्वात्मा में स्थित है।
स्वात्मा से ही निष्पन्न जीव, अपने स्वरूप में संस्थित है।।
इसलिए जीवघनगुण से युत, प्रभु वर्धमान का यजन करूँ।
मुझमें भी यह गुण प्रगटित हो, इस इच्छा से पद नमन करूँ।।10।।

ॐ ह्रीं अन्यसंश्लेषरहितस्वात्मनिष्पन्नजीवमयाय जीवघनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी सिद्ध कहे जाते, इस नाम से कार्य सिद्ध होते।
स्वात्मोपलब्धि हो चुकी जिन्हें, उपलब्ध न वे हमको होते।।
उनकी उपलब्धि कराने का, मारग गुरुजन बतलाते हैं।
उन सिद्धनामयुत महावीर को, हम सब अर्घ्य चढ़ाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरूपपदप्राप्ताय सिद्धनामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गुण में सर्वोपरि गुण सिद्ध-शिला पर गमनस्वभाव कहा।
उसको कर प्राप्त जिनेश्वर ने, अपना गुण सिद्धस्वभाव लहा।।
तनुवातवलय में स्थित पावन, सिद्धशिला को वंदन है।
लोकाग्र प्राप्ति के इच्छुक उन, प्रभु वीर को अर्घ्यसमर्पण है।।12।।

ॐ ह्रीं तनुवातवलयस्थितसिद्धशिलोपरिगमनस्वभावाय लोकाग्रगामुक-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य–

हैं पाँच नाम से जो प्रसिद्ध, कुण्डलपुर के प्रभु अवतारी।
सिद्धारथसुत त्रिशला नन्दन, प्रभुवीर बालब्रह्मचारी।।
उनके ये इक सौ आठ गुणों के, मंत्र बड़े अतिशयकारी।
ये मनोकामनासिद्धी व्रत में, जपते हैं सब नर-नारी।।1।।
श्री गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माताजी ने मंत्र बनाया है।
उनकी शिष्या ''चन्दनामती'' ने उनसे अर्घ्य बनाया है।।
पच्चीस सौ तीस वीर संवत्, वैशाख कृष्ण दुतिया आई।
प्रभु जन्मभूमि कुण्डलपुर में, अर्घावलि माला पहनाई।।2।।

दोहा– गुण अनंत प्रभु आप के, कैसे वरणूं नाथ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, मैं भी बनूँ सनाथ।।3।।

ॐ ह्री शताष्टगुणसमन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलप्रदाय श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।**

(108 बार)

जयमाला

शंभु छन्द –

जय जय तीर्थंकर महावीर, तुम सर्वसिद्धि के दाता हो।
जय जय जिनवर हे नाथ! वीर, तुम तो शिवमार्ग विधाता हो।।
जय जय सन्मति! अतिवीर प्रभो! तुम सम्यक्बुद्धि प्रदाता हो।
जय जय हे वर्धमान भगवन्! तुम आत्मशक्ति के दाता हो।।1।।
महावीर से दश भव पूर्व सिंह, पर्याय में सम्बोधन पाया।
फिर अणुव्रत धारण कर क्रम क्रम से, देव मनुज का भव पाया।।
उत्थान किया निज जीवन का, तो जग का भी उत्थान हुआ।
जिसने तुमसे शिक्षा पाई, उसका ही जनम महान हुआ।।2।।

कुण्डलपुर नंद्यावर्त महल में, चैत्र शुक्ल तेरस तिथि को।
राजा सिद्धारथ की रानी, त्रिशला ने जन्मा इक सुत को।।
वह ही संसार प्रसिद्ध हुआ, चौबिसवाँ तीर्थंकर बन कर।
नहिं उनके बाद हुआ कोई, इस भरतक्षेत्र में तीर्थंकर।।3।।
इसलिए इन्हें अंतिम तीर्थंकर, कहा गया इस भारत में।
लेकिन आगे भी जन्मेंगे, चौबिस तीर्थंकर भूतल पे।।
महावीर शिष्य श्रेणिक उनमें से, प्रथम जिनेश्वर पद लेंगे।
जो नगरि अयोध्या में तीर्थंकर ''महापद्म'' बन जन्मेंगे।।4।।
महावीर के पांचों कल्याणक से, जो जो धरा पवित्र हुईं।
वे आज बनीं गौरवशाली, सुरगण मुनिगण से वंद्य हुईं।।
है गर्भ जन्म तप कल्याणक से, पावन कुण्डलपुर नगरी।
उस निकट जृम्भिका ग्राम में, ऋजुकूला नदि तट है ज्ञानथली।।5।।
राजगृह का विपुलाचल पर्वत, प्रथम देशना स्थल है।
पावापुर का जलमंदिर प्रभु के, मोक्षगमन से पावन है।।
कुण्डलपुर राजगृह पावापुर, जिनवर तीर्थ त्रिवेणी है।
इसमें स्नान करें जो भी, वे आते मोक्ष की श्रेणी में।।6।।
महावीर के छब्बिस सौवें जन्मकल्याणक उत्सव बेला में।
श्री गणिनी ज्ञानमती माता ने रचा विधान अनोखा है।।
वह विश्वशांति महावीर विधान, छब्बिस सौ अर्घ्य समन्वित है।
प्रभु वीर के छब्बिस सौ गुण उसमें, मंत्रों द्वारा वर्णित हैं।।7।।
उसमें से इक सौ आठ मंत्र का, महावीरव्रत नाम पड़ा।
उस व्रत को धारण करने वालों, पर साक्षात् प्रभाव पड़ा।।
उन मंत्रों का आश्रय लेकर, यह नया विधान बनाया है।
महावीर प्रभू की पूजन का, शुभ भाव हृदय में आया है।।8।।
इस नवविधान में सर्वप्रथम, सोलहकारण के अर्घ्य दिया।
जिनको भाकर प्रभु महावीर ने, तीर्थंकर पद प्राप्त किया।।

जिन सोलह स्वप्नों के फल में, माँ ने तीर्थंकर सुत पाया।
उनका वर्णन भी है इसमें, फिर चौंतिस अतिशय दर्शाया।।9।।
अठ प्रातिहार्य आनन्त्य चतुष्टय, गुण हैं जो प्रभु ने पाया।
फिर दोष अठारह नाशक प्रभु को, अर्घ्य चढ़ा मन हरषाया।।
बारह गण के बारह अर्घ्यों में, सिद्धशिला तक पहुँच गये।
इन सात वलय में इक सौ आठ, गुणों के अर्घ्य समर्प्य दिये।।10।।
गुणमाला प्रभु के चरणों में, अर्पण कर निजगुण प्राप्त करूँ।
महावीर प्रभू के चरणों में, वन्दन कर सुख साम्राज्य वरूँ।।
अतिवीर वीर सन्मति भगवन्! मुझको सद्बुद्धि प्रदान करो।
भक्ती में रत निज भक्तों को, संसारजलधि से पार करो।।11।।
हो मनोकामना पूर्ण मेरी, रत्नत्रय मेरा सुदृढ़ बने।
जब तक शिवपद की प्राप्ति न हो, सम्यक्त्व भी मेरा सुदृढ़ बने।।
पूर्णार्घ्य समर्पण करूँ प्रभो! पूजन की इस जयमाला में।
''चन्दनामती'' भव भव में मुझको, जिनवर भक्ती मिला करे।।12।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदायश्रीमहावीर-जिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

– शंभु छंद–

जो भव्य मनोकामनासिद्धि, महावीर विधान करें रुचि से।
प्रभु जी के इक सौ आठ गुणों में, रमण करें तन मन शुचि से।।
वे लौकिक सुख के साथ-साथ, आध्यात्मिक सुख भी प्राप्त करें।
''चन्दनामती'' जिनवर भक्ती का, फल शिवपद भी प्राप्त करें।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।

प्रशस्ति

शंभु छन्द –

प्रभु महावीर को वन्दन कर, पूर्वाचार्यों को नमन करूँ।
माँ सरस्वती का कर अर्चन, श्रुत प्राप्ति हेतु भावना भरूँ।।
प्रभु महावीर की जन्मभूमि का, कण-कण पावन पूज्य कहा।
यहाँ दो वर्षों का समय बिताकर, जीवन मेरा धन्य हुआ।।1।।

प्रेरणा ज्ञानमति माताजी की, कई मंदिर निर्माण हुए।
महावीर शब्दकोश आदिक, कृतियों के भी निर्माण हुए।।
इस कड़ी में ही यह मनोकामना–सिद्धि विधान लिखा मैंने।
जिनवर भक्ती परिणामशुद्धि, हेतू यह काव्य रचा मैंने।।2।।

पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, वैशाख कृष्ण दुतिया आई।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, दीक्षातिथि मन को भाई।।
इस मनोकामना सिद्धि पाठ को, लिखकर पूर्ण किया मैंने।
निज-पर की मनोकामनाओं की, सिद्धि का भाव छिपा मन में।।3।।

है यही प्रार्थना वीर प्रभू से, भव-भव में तव भक्ति करूँ।
जब तक नहिं मोक्ष मिले तब तक, रत्नत्रय निधि को प्राप्त करूँ।।
है नभ में जब तक सूर्य-चाँद, पानी है जब तक सागर में।
आर्यिका चन्दनामति की यह, लघु कृति भी भक्ति भरे जग में ।।4।।

इति शं भूयात्

वीर वन्दना

रचयित्री—आर्यिका चन्दनामतिः

बसन्ततिलका छन्द—

(1)

तीर्थंकरस्य वृषभस्य परम्परायां,
वीर! त्वमेव चरमो जिनशासनेशः।
वीरातिवीर! गुणसागर! सन्मते! मे,
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(2)

धन्यास्ति कुण्डलपुरी तव जन्मभूमिः,
सिद्धार्थभूपजनकस्त्रिशला च माता।
इन्द्रोऽपि गर्भसमये कृतवान् सुपूजाम्,
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(3)

ते जन्मना प्रमुदितं नगरं समस्तम्,
जन्माभिषेकमकरोच्च सुधर्मशक्रः।
राज्यादिभोगनिचये लुलुभे न चित्तम्
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(4)

ज्ञानं चतुर्विधमजायत ते तपोभिः,
कैवल्यबोधलसितं च ननाम लोकः।
दिव्यो ध्वनिस्तव बभूव जनोपकारी,
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(5)

द्रव्यस्वभावमवलोक्य निरुद्धयोगाः,
ध्यानं च शुक्लमवलम्ब्य निजात्मलीनः।

पावापुरे सरसि मोक्षपदाधिकारी,
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(6)

प्रासंगिकास्तव जिनेश! हितोपदेशाः,
अद्यापि लोक-सुख-शान्तिकराः नितान्तम्।
श्रेयस्करी जनहिताय तवैव वाणी,
वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(7)

वीरस्य जन्मसमयस्य महोत्सवेऽस्मिन्,
त्यक्त्वा विरोधमखिलं जिनधर्मनिष्ठाः।
धर्मप्रचारविरताः हि वयं भवेम,
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

(8)

जैनत्व-मण्डित समाज नमोंऽशुमालिन्!
सम्पूर्णविश्वजनतात्रयतापहारिन्!
जैनेन्द्र-धर्म-रथ-चक्रगतिप्रदायिन्!
हे वर्धमान! जिनदेव! नमोऽस्तु तुभ्यम्।।

अनुष्टुप् छंद—

इदं वीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या चन्दनया कृतम्।
हार्दिकी कामना चैषा, जीयात् वीरस्य शासनम्।।

आरती श्री महावीर स्वामी की

तर्ज - तन डोले.....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।टेक.।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभूजी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।1।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभु लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन वहाँ, इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी.।।
थे नाथवंश के, भूषण तुम, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।2।।
यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा ।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी. ।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।3।।
शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।4।।
पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था ।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।5।।
वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी.।।
अतिशायकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।6।।

भगवान महावीर चालीसा

दोहा

सिद्धिप्रिया के नाथ हैं, महावीर भगवान।
सिद्धारथ सुत वीर को, मेरा कोटि प्रणाम।।1।।
वर्धमान अतिवीर प्रभु, सन्मति हैं सुखकार।
पाँच नाम युत वीर को, वन्दन बारम्बार।।2।।
चालीसा महावीर का, पढ़ो भव्य मन लाय।
रोग शोक संकट टलें, सुख सम्पति मिल जाय।।3।।

चौपाई

जय जय श्री महावीर हितंकर। जय हो चौबिसवें तीर्थंकर।।1।।
जय प्रभु तुम जग में क्षेमंकर। जय जय नाथ तुम्हीं शिवशंकर ।।2।।
जन्म लिया प्रभु कुण्डलपुर में। चैत्र सुदी तेरस शुभ तिथि में।।3।।
त्रिशला माता धन्य हो गईं। अपने सुत में मग्न हो गईं।।4।।
राजा सिद्धारथ हरषाये। पुत्र जन्म पर दान बंटाये।।5।।
स्वर्गों में भी खुशियाँ छाईं। इन्द्रों की टोली वहाँ आई।।6।।
नंद्यावर्त महल में जाकर। सिद्धारथ से आज्ञा पाकर।।7।।
पहुँची शची प्रसूती गृह में। माता की त्रय प्रदक्षिणा दे।।8।।
त्रिशला माँ का वन्दन करके। उनको निद्रा सम्मुख करके।।9।।
मायामय बालक को सुलाया। गोद में जिनबालक को उठाया।।10।।
तत्क्षण स्त्रीलिंग विनाशा। शिवपद की मन में अभिलाषा।।11।।
जिन शिशु को बाहर लाकर के। दिया इन्द्र के करकमलों में।।12।।
इन्द्र प्रभू को ले अति हरषा। हर्षाश्रू की हो गई वर्षा।।13।।
दो नेत्रों से देख न पाया। नेत्र सहस्र तब उसने बनाया।।14।।
निरखा अंग अंग जिनवर का। फिर भी उसका मन नहिं भरता।।15।।

मेरु सुदर्शन पर ले जाकर। किया जन्म अभिषेक प्रभू पर।।16।।
उस जन्मोत्सव का क्या कहना। तीन लोक में उसकी महिमा।।17।।
इन्द्र ने नामकरण किया प्रभु का। वीर व वर्धमान पद उनका।।18।।
जन्म न्हवन के बाद शची ने। प्रभु को किया सुसज्जित उसने।।19।।
फिर कुण्डलपुर नगरी आकर। मात-पिता को सौंपा बालक।।20।।
वहाँ पुनः जन्मोत्सव करके। नृत्य किया था कुण्डलपुर में।।21।।
पलना खूब झुलाया प्रभु का। नंद्यावर्त महल परिसर था।।22।।
एक बार दो मुनिवर आये। जिनशिशु को लख अति हर्षाये।।23।।
दूर हुई उनकी मनशंका। ''सन्मति'' नाम उन्होंने रक्खा।।24।।
बालपने में क्रीड़ा करते। मात-पिता के मन को हरते।।25।।
संगमदेव एक दिन आया। उसने सर्प का वेष बनाया।।26।।
वर्धमान तब खेल रहे थे। देवबालकों के संग वन में।।27।।
उनके बल की हुई परीक्षा। सर्प देव की थी यह इच्छा।।28।।
चढ़े सर्प के फण पर वे तो। मानो माँ की गोदी में हों।।29।।
सर्प ने देवरूप प्रगटाया। ''महावीर'' कह शीश झुकाया।।30।।
बालपने से यौवन पाया। लेकिन ब्याह नहीं रचवाया।।31।।
जातिस्मरण हुआ जब उनको। दीक्षा लेने चल दिये वन को।।32।।
बारह वर्ष कठिन तप करके। केवलज्ञान प्रगट हुआ उनके।।33।।
प्रथम देशना विपुलाचल पर। प्रगटी शिष्य मिले जब गणधर।।34।।
तीस वर्ष तक समवसरण में। दिव्य देशना दी जिनवर ने।।35।।
पावापुर से मोक्ष पधारे। तीर्थंकर महावीर हमारे।।36।।
सबने दीपावली मनाई। तब से ही दीवाली आई।।37।।
चला वीर संवत्सर जग में। सर्वाधिक प्राचीन सुखद है।।38।।
कार्तिक शुक्ला एकम तिथि से। प्रारंभ होता नया वर्ष है।।39।।
महावीर की जय सब बोलो। आत्मा के सब कल्मष धो लो।।40।।

शंभु छन्द

प्रभु महावीर का चालीसा, जो चालिस दिन तक पढ़ते हैं।
उनकी स्मृति में दीवाली के, दिन दीपोत्सव करते हैं।।
विघ्नों का शीघ्र विलय होकर, उनको मनवाञ्छित फल मिलता।
लौकिक वैभव के साथ साथ, आध्यात्मिक सौख्यकमल खिलता।।1।।

पच्चिस सौ उनतिस वीर संवत्, शुभ ज्येष्ठ कृष्ण मावस तिथि में।
रच दिया ज्ञानमति गणिनी की, शिष्या ''चन्दनामती'' मैंने।।
पावापुर में जलमंदिर का, दर्शन कर मन अति हर्षित है।
प्रभु महावीर के चरणों में, मेरी यह कृती समर्पित है।।2।।

रत्नत्रय की हो वृद्धि प्रभो, बोधी समाधि की प्राप्ती हो।
नश्वर इस मानव तन द्वारा, अविनश्वर पद की प्राप्ती हो।।
उससे पहले प्रभु आर्त रौद्र, ध्यानों की सहज समाप्ती हो।
मैं धर्मध्यान में रम जाऊँ, तब ही सच्ची सुख शांती हो।।3।।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जीवन दर्शन

जन्मभूमि	–	**कुण्डलपुर (नालन्दा) बिहार**			
पिता	–	महाराजा सिद्धार्थ			
माता	–	महारानी प्रियकारिणी (त्रिशला)			
वर्ण	–	क्षत्रिय	**गोत्र**	–	काश्यप
वंश	–	नाथवंश	**देहवर्ण**	–	तप्त स्वर्ण सदृश
चिन्ह	–	सिंह	**आयु**	–	बहत्तर वर्ष
अवगाहना	–	सात हाथ (अरत्नि)	**गर्भ**	–	आषाढ़ शु. 6
जन्म	–	चैत्र शु. 13	**तप**	–	मगसिर कृ. 10
दीक्षावन	–	षण्डवन (मनोहरवन)	**दीक्षा वृक्ष**	–	साल वृक्ष

प्रथम आहार – कूल ग्राम के राजा वकुल द्वारा (खीर)

विशेष आहार – कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा (खीर)

केवलज्ञान वन एवं वृक्ष – षण्डवन (मनोहरवन) एवं साल वृक्ष

केवलज्ञान – वैखाख शु. 10 (ऋजुकूला नदी के तट पर, ज़ृंभिका-बिहार)

वीरशासन जयंती (दिव्यध्वनि दिवस) – श्रावण कृ.1, राजगृही

मोक्षकल्याणक – कार्तिक कृ. अमावस्या **मोक्ष स्थल** – पावापुरी

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर	–	श्री इन्द्रभूति आदि 11	**मुनि**	–	चौदह हजार
गणिनी	–	आर्यिका चन्दना	**आर्यिका**	–	छत्तीस हजार
श्रावक	–	एक लाख	**श्राविका**	–	तीन लाख
जिनशासन यक्ष	–	मातंग देव (गुह्यकदेव)	**यक्षी**	–	सिद्धायिनी देवी

वर्तमान से 2608 वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ। भगवान महावीर स्वामी वर्तमान वीर नि.सं. से 2534 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

मनोकामना सिद्धि मण्डल विधान का नक्शा